ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 5, May 2016 Impact Factor 4.282 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

ऐक्रेलिक रंग चित्रण पद्धति

डॉ० रमेश चन्द्र वर्मा, व्याख्याता
(ड्राईग एण्ड पेन्टिंग), आर. डी. गर्ल्स कॉलेज, भरतपुर

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय के कलाकरों द्वारा अपने भावों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किसी न किसी माध्यम का चुनाव अव"य करना होता है ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो प्रागैतिहासिक मानव द्वारा गुफाओं की दीवारों पर कि गयी चित्रकारी के लिए नुकिले पत्थर का प्रयोग कर दीवरों पर चित्र (खरोच–खरोच कर) बनाये तथा उनमें प्राकृतिक रंग गैरु, हिरोंजी, काजल, सफेद खड़ीया आदि को प"ाु की चर्बी में मिलाकर गुफा की दीवरों पर खोदी गई आकृतियों में ठोक–ठोक कर भरा गया। (1) मोहनजोदड़ों एवं हडप्पा काल में प्राप्त कला सामग्री में पकाये गये मिट्टी के बरतनों पर लाल एवं काले रंग का प्रयोग कर उसे तैयार किया गया। (2) मिट्टी के बरतनों, खिलौनों के अतिरिक्त कॉसे एवं पत्थर में मूर्तियों का निर्माण किया गया। बौद्धकाल में बौद्धधर्मावलम्बियों द्वारा निर्मित पाषाण स्तूप (चेत्या) एवं विहरों में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्रों को गुफाओं की दीवरों पर बनाया गया। जिसके उदाहरण अजन्ता, बादामी, एलोरा, सित्तलवासन, आदि स्थानों पर देखने को मिलते हैं। (3) इनमें भित्ती चित्रण पद्धति में चित्र बनाये गये।

ग्रिफित्स महोदय के अनुसार अजन्ता तथा अन्य गुफाओं में भित्ति चित्रण की परम्परा वास्तव में टेम्परा तथा फ्रेस्को विधि का सम्मिश्रण है। (4) भित्ती चित्रण की समृद्ध परम्परा के प"चात् भारतीय कला इतिहास में एक नवीन माध्यम का प्रयोग हुआ, जिसमें पोथी चित्रण परम्परा का आर्विभाव हुआ। इसके अन्तर्गत पाल शैली, अपभ्रं"ा शैली एवं दक्षिण शैली में चित्रों का निर्माण हुआ। (5) इसमें ताड़ पत्र, भोज पत्र, कागज आदि पर प्राकृतिक रंगो के साथ चित्रों का निर्माण हुआ। इस प्रकार समयानुसार चित्र व चित्र बनाने की प्रविधियों एवं माध्यमों में अनेक प्रयोग होते रहे। 15 वीं से 19 वीं सदी के मध्य लघु चित्रण परम्परा आरम्भ हुई जो राजस्थानी, मुगल तथा पहाड़ी शैली के चित्रों में देखने को मिलती है। इसमें कागज की एक के ऊपर एक तह चिपकाकर तैयार की गई पृष्ठभूमि जिसे वसली कहा जाता है के ऊपर प्राकृतिक रंगों एवं बारीक ब्र"ा की सहायता से चित्र बनाये जाते थे। (6) भारत वर्ष में इस्ट

इण्डिया कम्पनी के आगमन के फलस्वरूप भारत में यूरोपियन कला माध्यमों का आगमन हुआ। भारत में राजा रविवर्मा ने सर्वप्रथम तैल रंग माध्यम में चित्र बनाये। (7) विदे"ाी सत्ता के अत्याचारों से परे"ाान भारतीय जन मानस में स्वेद"ाी विचारधारा को अपनाना आरम्भ किया।

19 वीं सदी के अन्त तक भारतीय कला में बंगाल से एक नवीन सकारात्मक प्रतिक्रिया का विकास हुआ। इस समय अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने जापानी कलाकरों, हिसिदा, ओकाकारा काकुओं एवं वाईतैकान जो कलकत्ता आये थे, से जापानी वॉ"ा तकनीक सीखी और एक नवीन"ौली का विकास किया। जिसे वा"ा पद्धति कहा गया। (8) इस चित्रण पद्धति में चीनी, जापानी, ईरानी, तथा भारतीय चित्रण पद्धतियों का मिश्रण कर भारतीय पौराणिक कथानकों का चित्रण किया गया था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के प"चात् भारत में आधुनिक कला का उत्तरोत्तर विकास होता रहा। संचार माध्यमों में तीव्रगामी विकास के साथ ही आवागमन व सांस्कृतिक आदान प्रदान के कारण कला में नवीनीकरण तीव्रगति से हुआ। कलाकार विषय चुनाव प्रयोग एवं पद्धति को अपनाने के लिए स्वतन्त्र हो गया। अनेक भारतीय कलाकार विदे"ाों से कला की नवीन पद्धतियों एवं तकनीक की f"ाक्षा ग्रहण करने लगे। पा"चात्य दे"ाों की नवीन प्रवृतियों को अपनाकर नवीन कार्य किये। (9) 20 वीं शताब्दी आधुनिक चित्रकला में नवीन माध्यमों एव प्रविधियों का प्रयोग दिनो–दिन बढ़ता चला गया। आज के वैज्ञानिक युग में चित्रकृत्तिया महज कैनवास, रंग तुलिका के पारम्परिक प्रयोग तक सीमित नहीं है। किन्तु आज के साधन सम्पन्न युग में स्टील, धातु, कॉच, कपड़ा, रेत, प्लास्टिक, फाइवर, चमड़ा, आदि के टुकडे भी चित्रकृत्तियों के माध्यम में प्रयुक्त हो रहे हैं। आधुनिक जीवन की जटिलताओं को विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रतिबिम्बित करती है। अनेक प्रकार के सिन्थेटिक रंगों के उत्पादन से चित्रकार नवीन प्रविधियों को विकसित करने में लगातार प्रयासरत है। इसी क्रम में ऐक्रेलिक चित्रण पद्धति का प्रचलन हुआ जिसमें प्रयुक्त रंग शीघ्रता से सुखकर अपनी चमक एवं पारदf"ाता को बनाये रखते है। कलाकारों के लिए सर्वग्रह बन गया। जिसका विवरण इस प्रकार है।

ऐक्रेलिक रंग चित्रण पद्धति:–

वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित चित्रण पद्धति में शुमार ऐक्रेलिक रंग कृत्रिम राल (रेजिन) द्वारा बनाया जाता है। (10) साधारण सिन्थेटिक रेजिन के बंधक में रंग पदार्थ (पिगमेंट) मिलाकर तैयार किया रंग ऐक्रेलिक नाम से जाना जाता है। इस

ऐक्रेलिक रेजिन का अविष्कार ओटोरोहम ने किया था। (11) तथा बहुत जल्द इससे ऐक्रेलिक रंग सन् 1964 में बना लिया गया। इस रंग का प्रथम प्रयोग 1940 के द"ाक में किया गया। 1950 के द"ाक तक यह रंग बाजार में मिलने लगा एवं सफलता पूर्वक प्रयोग में लिया जाने लगा। (12) ऐक्रेलिक रंग का प्रयोग किसी भी धरातल पर जैसे कैमवास, दीवार, कागज, लकड़ी पर किया जा सकता है। साथ ही इसको लगाने के लिए साधारण तुलिका, चित्रण चाकू को प्रयोग में लिया जा सकता है। रबड़ रोलर से भी इस रंग को लगाया जा सकता है।

चित्रांकन के लिये चयनित धरातल पर कोई वि"ोष तैयारी की आव"यकता नहीं होती। कैनवास का उपयोग करते समय ऐक्रेलिक प्राइमर की परत लगा दी जाये तो अच्छा रहता है। इसके प"चात् रंगीन पेन्सिल या साधारण पेन्सिल से रेखांकन किया जा सकता है। सीधे ब्र"ा से भी चित्रांकन आरम्भ किया जा सकता है। रंग लगाने से पहले चित्रकार को यह ध्यान रखना होगा कि रंग बहुत जल्दी सूख जाते है। अतः सावधानी से कार्य करना होगा। ऐक्रेलिक रंग को पानी के साथ मिलाकर प्रयुक्त किया जाता है। रंग में जितना अधिक पानी मिला होगा रंग उतना पारद"ार्क होता चला जायेगा। रंग को ट्यूब या प्लास्टिक के डिब्बे से कम मात्रा में निकालना चाहिये, वरना रंग सूख जायेगा एवं सूखने के प"चात् काम में नही लिया जा सकता है। चित्रण धरातल पर रंग लगाने पर पहली परत सूख जाने पर भी उसके ऊपर दूसरी परत आसानी से लगाई जा सकती है। रंगों की तान से कोई परिवर्तन नहीं होता और उसकी चमक बरकरार रहती है।

ऐक्रेलिक चित्रण पद्धति में सामान्यता तैल रंग वाली साधारण तूलिकाओं को प्रयोग में ले सकते है। पृष्ठभूमि के बड़े हिस्से में रंग लगाने के लिये जल रंग की कोमल तूलिकाओं को काम में लिया जा सकता है। चित्रण हेतु प्रयुक्त तुलिकाओं को तुरन्त धो लेना चाहिये, नहीं तो सूखने के प"चात् रंग उन पर जम जायेगा और तूलिका खराब हो जायेगी।

ऐक्रेलिक रंगों को चित्रकार न केवल शीघ्रता से चित्रण कार्य सम्पन्न कर लेता है बल्कि इसमें वि"िाष्ट प्रभाव भी सृजित किये जा सकते है। जैसे पूर्व में लगाई गई रंग तान पर टेप आदि से ढ़ककर शेष भाग पर पुनः रंग लगाकर चित्रण कर सकता है। जल रंगों की भाँति पलता या गाढे रूप में भी इनका प्रयोग किया जा सकता है। गाढे रूप में रंग लगाने के लिये उसमें बंधक के रूप में ऐक्रेलिक बंधक मिलाया जा सकता है। ये बंधक जेल एवं मेट मिडियम में मिलता है। रंग को सीधे ट्यूब से निकालकर धरातल पर लगाया जा सकता है।

इस प्रकार से बनाये गये चित्रों में परम्परागत ग्वास की तुलना में ज्यादा लचीलापन होता है। रंगों के सूखने पर तानिय परिवर्तन नहीं होता है। ऐक्रेलिक रंगों पर वार्नि"ा करने की आव"यकता भी नहीं होती किन्तु इन रंगों में बने खुरदरे फिनि"ा वाले भित्ति चित्रों पर ऐक्रेलिक वार्नि"ा करना आव"यक होता है।

वर्तमान समय में बहुत प्रकार के शेड्स में ऐक्रेलिक रंग बाजार में उपलब्ध है। जिनकी सहायता से चित्रकार नवीन प्रयोग कर चित्रकारी कर रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचिः–

1. भारतीय चित्रकला का इतिहास, अविना"ा बहादूर वर्मा, पृष्ठ संख्या 18
2. वही पृष्ठ संख्या 24
3. वही पृष्ठ संख्या 50–51
4. फाइन आर्टइन इण्डिया एण्ड सिलोन, विन्सेट सिमिथ पृष्ठ संख्या 89
5. भारतीय चित्रकला का इतिहास, ममता सिंह, पृष्ठ संख्या 369
6. भारतीय चित्रकला का इतिहास, अविना"ा बहादूर वर्मा पृष्ठ संख्या 160–162
7. समकालीन भारतीय कला श्रृखंला रवि वर्मा, पृष्ठ संख्या 20
8. भारतीय चित्रकला का इतिहास, अविना"ा बहादूर वर्मा पृष्ठ संख्या 274–275
9. वहीं पृष्ठ संख्या 279–284
10. कला के नवीन सिद्धान्त एवं तकनीक, नरेन्द्र सिंह यादव पृष्ठ संख्या 73
11. वही पृष्ठ संख्या 74
12. वही पृष्ठ संख्या 76
13. वही पृष्ठ संख्या 84